।। सुयं मे आउसं ।।

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

विक्रम संवत २०७७ • वर्ष : ५ • अंक : २ • अक्तूबर २०२१

श्रुतरत्न पदालंकार प्रसंग

श्रमण भगवान महावीरस्वामीजी की परंपरा में सैकडों आचार्य भगवंतों ने हजारों शास्त्रों की रचना की है। इन शास्त्रों की रचना से पूर्व श्रुतज्ञान मुखपाठ की परंपरा द्वारा पीढी दर पीढी प्रवाहमान रहा। आचार्यश्री देवर्धिगणिजी क्षमाश्रमण के बाद ये शास्त्र ग्रंथस्थ होकर आजतक संरक्षित और संवर्धित होते आए हैं। अनेक श्रीसंघों द्वारा शास्त्र ताडपत्र आदि पर हाथ से लिखे जाते रहें। इनकी असंख्य पांडुलिपियां पोथी के रूप में तैयार हुई, जिन्हें गांव-गांव में सरस्वती भंडार, सिद्धांत कोष एवं चित्कोष नामक अनेक ज्ञानभंडारो में स्थापित किया जाता रहा है।

कालांतर में तत्कालीन परिस्थितियों के प्रभाव से ज्ञान की देखभाल एवं संवर्धन-संरक्षण की पुरानी परम्परा क्षीण होती गई। ज्ञान की भाषा और लिपि के जानकारों की संख्या कमतर हो गई। उपलब्ध हस्तप्रतों के संपादन करने वाले मर्मज्ञ विद्वानों की संख्या भी काफी गिनी-चुनी रह गई। शोध-संवर्धन प्रक्रिया क्षीण होने लगी। अनेक शास्त्र विद्वानों की नजर से विमुख रह गये। हस्तप्रतों की दशा दीन-हीन हो गई।

ऐसी विषम परिस्थिति में श्री श्रुत की रक्षा के खातिर अपना जीवन समर्पण करने के साथ कुछ विरल गुरुभगवंतों ने बीडा उठाया और प्राचीन हस्तप्रतों में छिपे श्रुतज्ञान की शोध-संपादन और संवर्धन की परंपरा को प्रवाहमान रखने के लिए कटिबद्ध बने। इन विरल महापुरुषों में पूज्य गणिवर्य **श्रीवैराग्यरतिविजयजी म.सा.** का नाम अग्रणी है।

पद प्रदान

लगभग १२ वर्ष पूर्व, वि. सं. २०६४ में पूज्य गणिवरश्रीजी का पूना में आगमन हुआ था। वि. सं. २०६६ में उनकी निश्रा में **सुजय गार्डन संघ** की उपस्थिति में श्रुतभवन की संकल्पना की नींव रखी गई थी। वि. सं. २०६७ में हाईड पार्क स्थित चातुर्मास में **श्रुतभवन संशोधन केंद्र** की गतिविधि की प्रारंभिक शुरुआत हुई। विगत दस वर्षों में कात्रज हिल स्थित श्रुतभवन ने श्रुतज्ञान, श्रुतज्ञान की प्राचीन हस्तप्रतों आदि के संरक्षण, संपादन और संवर्धन के क्षेत्र में अपना अग्रगण्य स्थान प्राप्त किया है।

पूज्य गणिवरश्रीजी ने इस महत कार्य के लिए अपना सर्वस्व समर्पण किया है। धर्म के सार्वजनिक क्षेत्र से स्वयं को विमुख रखकर उन्होंने अपनी तमाम शक्तियों और क्षयोपशम को श्रुतभवन के कार्यों के लिए समर्पित कर दिया है। आज पुणे शहर का सद्भाग्य है कि, उसे गणिवरश्रीजी की इस गौरवपूर्ण यात्रा का साक्षी और सहभागी बनने का अवसर प्राप्त हुआ है।

इस वर्ष (वि. सं.२०७७) पुनः हाईड पार्क सोसायटी स्थित श्रीसंघ की आग्रहभरी विनंति से पू. गणिवरश्री का चातुर्मास उनके श्रीसंघ में आयोजित हुआ। इस दरम्यान आत्मिक विकास में भक्तामर स्तोत्र के सूत्रों का स्वरूप विषयक व्याख्यान, श्रुतज्ञान की प्राचीन परंपरा का विकास एवं वर्तमान और भविष्य श्रुत की प्रासंगिकता के साथ ध्यान विषय का सारगर्भित प्रवचन सुनकर समूचा श्रीसंघ अभिभूत हो उठा। श्रीसंघने गणिवरश्रीजी की श्रुत के प्रति अगाध निष्ठा को नजदीक से देखा। श्रुत से जुडी उनकी प्रज्ञा और समर्पण से सबके मन गद्गद् हो उठे। श्रीसंघ के मन में प्रबल भावना जागृत हुई कि, पूज्यश्री तो श्रुत के रत्न समान है। उनके अद्भुत व्यक्तित्व और कार्यों से प्रभावित होकर सबने सर्वसम्मत होकर पूज्यश्री को **श्रुतरत्न** की उपाधि (पदवी) से विभूषित करने का निर्णय कर लिया। पूज्यश्री ने अपनी कार्यशैली एवं जीवनशैली में हमेशा स्वयं को नाम-यश आदि भावों से असंपृक्त रखा है। श्रीसंघ के इस निर्णय के प्रति भी उन्होंने काफी उदासीनता रखी। श्रीसंघ का आग्रहभाव विजयी हुआ और वि. सं. २०७७ श्रावण वद सप्तमी, रविवार, दिनांक- २९ अगस्त २०२१ के दिन श्रुतधर्म और श्रुतरक्षक के

विमोचन

पू. गणिवरश्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा. के हृदयोद्गार

- यह कार्य मैंने नहीं किया है, बल्कि इस कार्य के लिए मेरा चयन हुआ है। काम परम शक्ति का है, आदेश आचार्य भगवंतों का है और माध्यम श्रुतभवन है।
- श्रुतभवन के कार्य को और अधिक वेग प्राप्त हो, बस इसी भाव के साथ पूरे श्रुतभवन परिवार की तरफ से यह सन्मान स्वीकार कर रहा हूं।
- श्रुत का कार्य मुझसे बडा है। विचार से व्यक्ति बडा बन जाये, तो बडा काम छोटा दिखलाई देगा। व्यक्ति नहीं, श्रुत का कार्य अनमोल है, इस बात को हम सबने ध्यान में रखना है।

पूज्य आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयमोक्षरतिसूरिजी म.सा. के हृदयोद्गार

- श्रुतज्ञान के लिए निरंतर चार-साढे चार घंटों तक इतनी बडी संख्या में उपस्थिति आश्चर्य और अनुमोदना का विषय है।
- गणिवरश्री सपने देख सकते हैं और सपनों को साकार भी कर सकते हैं। उनके पास सहयोगियों को जोडने की कला है। इस सब कारणों से उनके नये सपने भी पूरे होंगें।

सन्मान स्वरूप एक भव्य समारोह का आयोजन हुआ। इस प्रसंग पर पुणे नगर के गणमान्य श्रीसंघों एवं अनेक गणमान्य श्रेष्ठिवर्यों की विशेष उपस्थिति में विशाल जनसमुदाय शरिक हुआ। इस अवसर पर पूज्य गणिवरश्री द्वारा संपादित **लोकप्रकाश** ग्रंथ के सोलह(१६) भागों एवं **श्रुतभवन संशोधन केंद्र** द्वारा संग्रहित एवं प्रकाशित **हस्तलिखित शास्त्रसंग्रह सूचि** का संघार्पण संपन्न हुआ एवं तीन नूतन जिनालयों की प्रतिष्ठा के मुहूर्त भी प्रदान किये गये।

राधनपुर निवासी श्री **जीवतलाल प्रतापशी** परिवार के शुभहाथों से लोकप्रकाश ग्रंथ का लोकार्पण हुआ। **श्री डॉ. जितेंद्र बी. शाह** ने लोकप्रकाश पर परिचयात्मक वक्तव्य प्रस्तुत किया। पुणे नगर के गणमान्य श्रेष्ठिवर्य एड. **श्री एस के. जैन, ओमप्रकाश रांका, विजय भंडारी, दीपक शाह, देवीचंदजी जैन, एड. महेंद्र कोठारी, संजय शाह, अचल जैन** एवं हाईड पार्क संघ की ओर से **रतनजी मेडतिया, प्रकाश ओसवाल, जिनेंद्र लोढा** आदि ने शुभकामनाएं व्यक्त की। संपूर्ण आयोजन का लाभ हाईड पार्क श्रीसंघने परिश्रम पूर्वक प्राप्त किया।

धर्मसभा में आचार्यदेवेश श्रीमद् **विजयमोक्षरतिसूरिजी** म.सा. की पावन निश्रा समारोह के समापन तक प्राप्त हुई। पू. मुनिश्री **प्रशमतिलकविजयजी** गणिवर म.सा. की उपस्थिति एवं साध्वीजी **श्री जिनरत्नाश्रीजी** का भी सांनिध्य प्राप्त हुआ।

प. पू. आचार्यदेवेश श्रीमद् विजयमोक्षरतिसूरिजी म.सा. की पावन उपस्थिति में हाईड पार्क संघ द्वारा रजत पत्र पर लिखित प्रशस्तिपत्र अर्पण समय पर हर्षपूरित जनमेदिनी ने हृदयपूर्वक अक्षत बरसाकर पूज्यश्री को बधाया।

इस प्रसंग पर अनेक पूज्य गुरुभगवंतोंने शुभकामना पत्र भेजे उनके अंश प्रस्तुत हैं -

गणिवरश्री ने दर्शनशास्त्र आदि का गहन अध्ययन किया है।

पूना संघ के महाजन

अष्टसहस्रीतात्पर्यविवरण जैसे ग्रंथों का उत्तम संपादन किया है। श्रुतभवन के माध्यम से अनेक नये पंडित तैयार किये हैं। वर्धमान जिनरत्नकोश रूपी बहुउपयोगी प्रकल्प द्वारा कौनसे ग्रंथ की हस्तप्रत किस भंडार से उपलब्ध हो पायेगी? ऐसी सुविधा, संपादन कार्य से जुडे विद्वानों के लिए सुलभ कर दी है। श्रुत की ऐसी अनन्य उत्कृष्ट सेवार्थी गणिवरजी को श्रुतरत्न पदवी अर्पण प्रसंग पर शुभकामनाएं...

आ. मुनिचंद्रसूरि

बदलते परिवेश में इसी परंपरा को आगे बढाने में गणिवर श्री वैराग्यरतिविजयजी म. का योगदान अप्रतिम है। इनकी श्रुतसेवा नेत्रदीपक है। वास्तव में वे जिनशासन के रत्न हैं। इस प्रसंग पर आपको एवं श्री गणिवर को हार्दिक बधाई एवं दिली शुभकामनाएं।

उपाध्याय श्री भुवनचंद्रजी म.सा. (पार्श्वचंद्र गच्छ)

जिनशासन योग्य को और योग्य रूप प्रदान करने की परंपरा आप आगे बढा रहे हैं, इस कार्य के लिए हर्ष के साथ शुभेच्छा...

पद प्रदान प्रसंग पर ऐसे समर्थ श्रमण को ऐसा सहयोग प्रदान हो, जैसा कुमारपाल महाराजाने श्री हेमचंद्राचार्यजी को प्रदान किया था।

आ. यशोवर्मसूरीश्वरजी म.सा.

आपको जो पदवी दी जा रही है वो उचित व्यक्ति का उचित बहुमान स्वरूप है।

आ. अजितशेखरसूरि का अनुवंदन

उनके कार्य का अभिनंदन हाईड पार्क टेम्पल ट्रस्ट द्वारा श्रुतरत्न अलंकरण द्वारा किया जा रहा है, जानकर प्रसन्नता। महाराजश्री का कार्य जिनशासन के गौरव में अभिवृद्धि करनेवाला हो यही हार्दिक मंगलकामना।

महेन्द्रऋषि युवाचार्य श्रमणसंघ

दिल की गहराईओं से आपश्री जी का अभिनंदन करता हूं। यह श्रुत-सेवा निराबाध-गति से बढती रहे इसके लिए मैं हृदय से शुभकामना करता हूं।

बहुमान पत्र

उपा. जितेंद्रमुनि (श्रमणसंघ)

श्रुतभवन संशोधन केंद्र को हेडक्वार्टर बनाकर वर्तमान दुनिया से बेखबर रहकर अनेक ग्रंथों-शास्त्रों के संशोधन-संपादन एवं संकलन द्वारा विद्वद्भोग्य और जनभोग्य श्रुतरत्न परोसा जा रहा है, जो कि वास्तविक रूप से लाजबाव है।

आ. आनंदवर्धनसूरि

आ. आत्मदर्शनसूरि (भायंदर)

योग्य आत्मा को योग्य पदवी अर्पण... अर्थात श्रुतरत्न की पदवी... खूब खूब अनुमोदना...

ज्योतिषाचार्य डॉ. हेमचंद्रसूरि (प्रेमसूरि समुदाय)

निरंतर श्रुतसेवा ही आपका पर्याय बन चुका है। विद्वत्ता के साथ आपकी नम्रता, कृतज्ञता प्रशस्य बनी है। आपके द्वारा और अधिक से अधिक श्रुतसेवा के यज्ञ आयोजित होते रहें, यही मंगल शुभकामना..

आ. यशोप्रेमसूरि के अनुवंदन

आप पूज्य श्री वैराग्यरतिविजयजी गणिवर्यश्री को श्रुतरत्न की महनीय उपाधि से विभूषित करने जा रहे हैं इस संदेश से सानंद आश्चर्य हुआ। आनन्द का निदान यह है कि उचित एवं योग्य व्यक्ति को यह सन्मान दिया जा रहा है एवं आश्चर्य का कारण यह है कि इस कार्य में आपने इतना विलंब किया। पूज्यश्री की प्रतिभा को नजर में रखते हुए यह प्रसंग बहुत पहले हो जाना चाहिए था।

श्रुतरत्न तो वे पहेले से हैं, हम उनमें कुछ आरोपित नहीं कर रहे हैं, हम तो केवल जो है उसे प्रकाशित कर रहे हैं इतना अवश्य ध्यान में रहे।

मुनिश्री त्रैलोक्यमंडनविजयजी म.सा.

श्रुत संरक्षण-संवर्धन-संमार्जन प्रति आपकी सूक्ष्मदृष्टि और तदनुरूप कुशल व्यवस्थापन आपका परिचय है। इस कारण आनंद और अनुमोदन छलकने लगें, इसमें क्या आश्चर्य है।

मुनि श्री शीलचंद्रविजयजी म. (डहेलावाला)

आगामी इतिहास आपके इस बलिदान को कभी भूल नहीं पायेगा। आपश्री जिस सहजता से श्वास लेते हैं, उसी भाव से सहज ग्रंथ तैयार कर लेते हैं।

मेरे जीवन आकाश में आप ध्रुवतारें की तरह प्रकाशमान रहे हैं..

मुनि श्री प्रभुशासनरत्नविजयजी

पूना में रहकर हमारी पीढीयां गुजर गई लेकिन श्रुत क्या है यह हमें कभी किसीने बताया नहीं, ना ही हमारी आनेवाली पीढी को हम बता पातें। साहेबजी के अथक प्रयास से आज हमें श्रुत शब्द का अर्थ समझा। उसकी महत्ता समझ में आई। श्रुत की भक्ति करने का मौका हमें मिला।

हाईड पार्क परिवार का सद्भाग्य कि उन्होंने हमारी विनंति को मान्यता देकर पद लेने की अनुमति दी वरना ये इतने नि:स्पृह है कि श्रुतभवन में कहीं पर भी अपने नाम की तकती नहीं बनाई।

प्रकाश ओसवाल

एक युनिवर्सिटी जितना नहीं कर सकती उतना काम किया। उन्होंने हमेशा पूरे शासन को नजर के सामने रखा। कभी समुदाय, गच्छ, संप्रदाय की बात नहीं करी। बात करी श्रुत की। श्रुत सभी के लिए है।

जिनेंद्र लोढा

समाचार

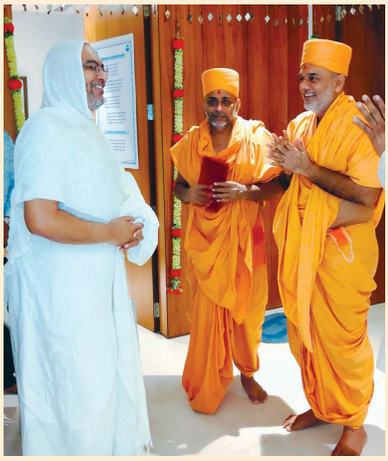

दि. ४-१०-२०२१ के दिन हाईड पार्क में BAPSसंस्था के आंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रेरक वक्ताश्री **ज्ञानवत्सलस्वामीजी** ने पूज्य गुरुदेव की मुलाकात ली। वर्तमान पीढी को आध्यात्मिकता से जोडने के विषय में वार्तालाप हुआ। श्रुतभवन संशोधन केंद्र की प्रवृत्तियाँ देखकर उन्होंने आनंद व्यक्त किया और संस्था द्वारा प्रवर्तमान संस्कार निर्माण प्रवृत्ति की जानकारी ली।

दि. ३१ जुलाई - १ अगस्त और ७-८ अगस्त २०२१ के दिन हाईड पार्क में हाईडपार्क संघ और श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन के संयुक्त तत्त्वावधानमें ब्राह्मीलिपी के २ कार्यशालाओंका आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में १२० प्रशिक्षणार्थिओं ने सहभाग लिया और ७०प्रतिशत से अधिक परिणाम आए।

दि. २९-०८-२०२१ के दिन पूज्य गणिवरश्री के मार्गदर्शन में निर्माणाधीन श्री कुंथुनाथस्वामी जिनमंदिर, डिवाइन सोसायटी, वानवडी, श्री आदिनाथस्वामी गृहमंदिर, क्लाउड-नाईन सोसायटी और श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनमंदिर, शांता-कांता निवास, कोंढवा इन तीन जिनमंदिरों के प्रभुप्रवेश व प्रतिष्ठा मुहूर्त प्रदान किये गए।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प अंतर्गत **लोकप्रकाश, पृथ्वीचंद्रचरित्र, प्रवचनविचारसार, प्रदेशीराजा चरित्र, उपदेशशत सह अवचूरि, हैमविभ्रम सह टीका, नामाख्यातीय वृत्ति, उपा. श्री विनयविजयजी म.सा. कृति - संकलन एवं संपादन, सीता चरित्र, लब्धिस्तव सह अवचूरि, मुग्धमेधाकरालंकार वृत्ति** और **अग्यार अंग सज्झाय** का संपादन कार्य चालु है। पू. सा. श्री **मधुरहंसाश्रीजी** म. **प्रदेशीराजा चरित्र** का लिप्यंतर कर रही है। पू. सा. श्री **धन्यहंसाश्रीजी** म.सा. **पर्युषणचिंतामणि प्रकरण सह टबार्थ** का लिप्यंतर कर रही है।

वर्धमानजिनरत्नकोशप्रकल्प अंतर्गत पू. आ. श्री **मुनिचंद्रसू.**म.सा., पू. आ. श्री **भव्यसुंदरसू.**म.सा., पू. आ. श्री **नररत्नसू.**म.सा., पू.ग.श्री**सुयशचंद्रवि.**म.सा., पू.ग.श्री**शीलचंद्र**वि.म.सा., पू.मु.श्री**धर्मशेखरवि.**म.सा., पू.ग.श्री**ह्रींकाररत्नवि.**म.सा., पू.मु.श्री**चंद्रदर्शनवि.**म.सा., पू.मु.श्री**कृपारत्नवि.**म.सा., पू.मु.श्री**सर्वहितवि.** म.सा., पू.मु.श्री**दानरत्नवि.**म.सा. तथा डॉ. **जितेंद्र शाह** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

सौ ज्योतीबेन नलिनकांत जेवतलाल दलाल, पुणे
श्री अभयजी श्रीश्रीमाळ (अभुषा फाउंडेशन), चेन्नई
श्री महेंद्रभाई कांतीलाल शाह
सौ. आशालताबेन केसरीमलजी जैन, पुणे
सौ. झुंबरबेन कीर्तिकुमार धरमचंद ओसवाल, पुणे
श्री कांतीलाल फतेचंदजी छाजेड
सौ. इलाबेन महेंद्रभाई शाह
श्री योगेशभाई चंदालिया
श्री सिद्धार्थ रतिलाल शाह, अहमदाबाद
श्री हसमुखभाई मनसुखलाल शाह, मुंबई
श्री डिवाईन जैन संघ
सौ. कविताबेन कोठारी, पुणे
श्रीमती उर्वशीबेन शाह, पुणे
सुभाग्य लेकटाऊन सामायिक मंडल, पुणे
सौ. कामनाबेन परमेचा, पुणे

हाईड पार्क परिवार, पुणे द्वारा श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए विशिष्ट सहयोग प्राप्त हुआ है।
श्रुतभवन परिवार उनकी बहुत बहुत अनुमोदना करता है।

प्रतिभाव

पू. मु. श्री वैराग्यरतिविजयजी म.सा का पुरुषार्थ बहुत किमती है और फलदायक है। उसका प्रत्यक्ष अनुभव आज हुया। एक आल्हादक ज्ञानमंदिर के स्पर्श का लाभ मिला। इस तरह के ज्ञानभक्ति के कार्य में अग्रेसर हो और उसमे सफल हो यही आशीर्वाद। देखकर बहुत आनंद हुआ।

- पू. गच्छा. आ. श्रीमद् विजय दौलतसागरसूरीश्वरजी म.सा.

सुवाक्य

कुछ लिखकर सो,
कुछ पढकर सो,
तूं जिस जगह जागा सवेरे,
उस जगह से बढकर सो।
-भवानीप्रसाद मिश्र

Printed Matter
Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel